

Eugen Biser

Jesus

Sein Lebensweg in neuem Licht

Verlag Friedrich Pustet
Regensburg

Inhalt

| | | | |
|-------------------------|----|-------------------------|----|
| Vorwort | 7 | Die Verfluchung | 53 |
| Die Kindheitsgeschichte | 9 | Die Liebestat | 55 |
| Die Taufe | 11 | Nehmt und esst! | 57 |
| Die Aufgabe | 15 | Zitternd und zagend | 60 |
| Die Wüste | 19 | Das Verhör | 64 |
| Die Versuchung | 22 | Die Totenklage | 67 |
| Das Sprachereignis | 25 | Der Todesschrei | 73 |
| Abba – Vater | 27 | Die Erhöhung | 75 |
| Das Gottesgeschenk | 30 | Die Auferstehung | 78 |
| Das Gottesgleichnis | 33 | Auferstanden wohin? | 82 |
| Das Gotteswunder | 38 | Die Denkbarekeit | 85 |
| Die Krise | 42 | Auferstanden, aber wie? | 89 |
| Die Flucht | 44 | Die Erkennbarkeit | 91 |
| Der Entschluss | 47 | Das Selbstbewusstsein | 95 |
| Der Einzug | 51 | Der Fortgang | 98 |